सीखने की राह में पुस्तकालय का संग

सम्पूर्णानन्द जुयाल

औपचारिक पाठ्यक्रम से इतर पुस्तकों का वृहद संसार है। यह संसार पढ़ने के आनन्द से तो भरा है ही, एक परिपक्व पाठक बनने की राह भी बनाता है। जिसे हम सीखना कहते हैं वह दरअसल पुस्तकों के इस संसार के बिना सम्भव ही नहीं। पुस्तकालय के माध्यम से यह जीवन को अलग-अलग सन्दर्भों में समझने के मौक़े देता है। साहित्य का यह रस स्कूली जीवन को तो सुगम बनाता ही है जीवनभर के लिए एक सक्रिय पाठक भी बनाता है। इस आलेख में लेखक ने पुस्तकालय के इसी प्रभाव से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया है। सं.

"किताबें यदि बच्चों की पहुँच में हों तो वे निश्चित ही उसे टटोलते, देखते हैं, और साथ ही समझने की कोशिश भी करते हैं। यही कोशिश उन्हें किताबों की दुनिया से परिचित करवाती है, इसलिए हम बड़ों का दायित्व है कि किताबों तक उनकी पहुँच बनाएँ और साथ ही उन्हें बरतने में उनकी मदद भी करें।"

भाषा के सन्दर्भ में शुरुआती कक्षाओं में स्कूली शिक्षा का दायित्व क्या है? शायद बच्चों में भाषा के मूलभूत कौशलों, जैसे– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि का विकास करना, ताकि इन मूलभूत कौशलों के आधार पर वे विज्ञान, गणित, पर्यावरण अध्ययन जैसे विविध विषयों में अपनी समझ बना सकें और साथ ही अपने लिए दुनिया के मायने भी गढ़ पाएँ। इन भाषाई दक्षताओं के निमित्त कई बार आँकड़े बताते हैं कि फलाँ प्रतिशत बच्चे फलाँ कक्षा में पढ़ना-लिखना नहीं जानते। इसका एक मूलभूत कारण यह भी समझ में आता है कि विद्यालयों में भाषा शिक्षण की प्रक्रियाएँ ज़्यादातर पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित हैं, इनमें सामान्यतः उपलब्ध बाल साहित्य का अर्थपूर्ण उपयोग नहीं हो पा रहा है।

भाषाई दक्षताओं के विकास हेतु हमारे पास पाठ्यपुस्तकों के रूप में एक संसाधन मौजूद है ही, परन्तु अकसर मैंने अपने आसपास यह देखा और सुना है कि अभी तक पाठ्यपुस्तकें विद्यालय में नहीं पहुँच पाई हैं, अभी तो छप ही रही हैं, अब तो बहुत देर हो गई, इत्यादि, तो अब क्या पढ़ाएँ और कैसे पढ़ाएँ? जैसे यक्ष प्रश्न हमारे सामने होते हैं और समय निकला जा रहा होता है। समाधान के तौर पर कभी 'मिशन कोशिश' का कार्यक्रम आ जाता है व सीखने के प्रतिफलों पर ख़ूब माथापच्ची होती है। इसका परिणाम हमारे सामने है। पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए बहुत सारे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं पर विद्यालयों में भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं की धुरी में पाठ्यपुस्तक ही देखने में आती है, और उसमें भी फ़ोकस अभ्यास-माला पर होता है, जिसमें लम्बे समय तक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर याद करने तक ही पाठ्यपुस्तकों को सीमित कर दिया जाता है। क्या पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य संसाधनों का उपयोग भी पढ़ने-लिखने की प्रक्रियाओं में किया जा सकता है? और अगर हाँ तो फिर कैसे? इस सम्बन्ध में पहली बात यह है कि पाठ्यपुस्तकें ज्ञान प्राप्त करने का केवल एक माध्यमभर हैं, सबकुछ नहीं हैं, इसके

अलावा हमारे परिवेश और उपलब्ध बाल साहित्य का उपयोग भी भाषा शिक्षण में किया जा सकता है।

पुस्तकालय



चार साल पहले जब मैं अपने इस विद्यालय में आया तो बहुत सारी भ्रान्तियों से रूबरू हुआ। अपने साथियों से विद्यालयों में उपलब्ध बाल साहित्य या पुस्तकालय के बारे में चर्चा-परिचर्चा होती रहती थी जिससे बाल साहित्य के उपयोग पर बहुत सारी धारणाओं के बारे में पता चला, जैसे– बच्चे तो किताबें फाड़ देते हैं, ले जाने पर वापस ही नहीं लाते हैं, किताबें खो जाती हैं, बच्चे किताबें नहीं पढ़ते केवल चित्र ही देखते हैं, बच्चों को ज़्यादा स्वतंत्रता देना बेकार है, अपनी पाठ्यपुस्तक ही पढ़ लें बहुत है, इत्यादि। ये सभी कारण बच्चों को किताबों से दूर रखने हेतु पर्याप्त थे। इन सब बातों के बीच ही निर्णय लिया कि ख़ुद कोशिश करके देखा जाए। और पहले क़दम के रूप में पुस्तकालय को संगठित किया गया जिसके लिए पूर्व तैयारी के तौर पर कुछ कार्य इस प्रकार किए गए :

- अलग-अलग अलमारियों में रखी गई किताबों को एक जगह एकत्र किया गया और बच्चों की मदद से उन्हें साफ़ किया गया।
- पुरानी व नई किताबों को छाँटकर अलग-अलग रखा गया।
- चित्रों वाली किताबों व टेक्स्ट वाली किताबों को अलग-अलग किया गया।
- अब कक्षा स्तर के अनुसार किताबों को छाँटकर अलग रखा गया।
- एक कक्ष में इन किताबों को अलमारियों में एवं विभिन्न डोरियों पर सुसज्जित किया गया ताकि बाल पुस्तकालय के रूप में इनको व्यवस्थित किया जा सके।

इस प्रकार विद्यालय में उपलब्ध बाल साहित्य को बाल पुस्तकालय के रूप में व्यवस्थित तो कर दिया परन्तु अब सवाल यह था कि इन किताबों का उपयोग पढ़ने-लिखने हेतु कैसे किया जाए और इसके लिए कुछ बातें निम्नवत तय की गईं :

- बच्चों में पुस्तकों के रखरखाव के प्रति संवेदनशीलता लाना, ताकि किताबों का सदुपयोग बिना किसी क्षति के किया जा सके।
- बच्चों को उनके स्तरानुसार उपलब्ध बाल साहित्य को पढ़कर अपनी समझ साझा करने व लिखने के अवसर देना।
- बच्चों से उनके पढ़े व लिखे पर निरन्तर बातचीत करना।

पुस्तकालय उपयोग हेतु कार्य योजना : उपर्युक्त बातों को संज्ञान में लेते हुए एक कार्य योजना तैयार की गई जिसमें कुछ प्रमुख बिन्दुओं, जैसे– पुस्तकालय उपयोग पर बच्चों से संवाद, कक्षाओं के अनुसार किताबों का वितरण, पुस्तकालय के नियमित उपयोग हेतु पढ़ने की घण्टी एवं पढ़ने का कोना, समूह चर्चा-परिचर्चा के साथ-साथ एक दूसरे से

समझ को साझा करना, कक्षाओं में पढ़ने का कोना विकसित करना, आदि पर काम करने का सोचा गया।

बच्चों ने ली ज़िम्मेदारी : पुस्तकालय हेतु किताबों का एकत्रीकरण, साफ़-सफ़ाई, पुनर्गठन और निर्माण या किताबों का रख-रखाव, वितरण, लेनदेन रजिस्टर मेंटेन करना और पढ़ने-लिखने में किताबों का उपयोग आदि सभी प्रक्रियाओं में बच्चों ने ख़ूब भागीदारी निभाई। इसमें बच्चों के साथ किताबों के महत्त्व और पुस्तकालय के रखरखाव को लेकर काफ़ी बातचीत की गई और साथ ही उन्हें किताबों के रख-रखाव, वितरण, लेनदेन रजिस्टर को मेंटेन करने जैसी कुछ ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गईं। इसका परिणाम यह रहा कि बच्चों में पुस्तकालय के प्रति अपनेपन की भावना विकसित हो पाई और वे आज भी अपनी ज़िम्मेदारियों को बख़ूबी निभा रहे हैं।

किताबों का स्तरीकरण : हमारे विद्यालय में आज लगभग 500 किताबें उपलब्ध हैं, जिनमें बहुत सारी किताबें पुरानी हैं और कुछ नई किताबें हमने अलग-अलग स्रोतों से जुटाई हैं। इन किताबों को अभी हमने दो स्तरों में बाँटा है। कक्षा 1 व 2 के



लिए ऐसी पुस्तकों का चयन किया गया जिनमें चित्र ज़्यादा और लिखावट कम व जो अपेक्षाकृत बड़े फोंट में हों, साथ ही चित्र ख़ूब रंग-बिरंगे हों, और ठीक इसी तरह कक्षा 3 से 5 के लिए चित्रों के साथ-साथ पर्याप्त लिखावट, बड़े फोंट और रंगीन चित्रों के साथ-साथ श्वेत-श्याम चित्र वाली किताबें भी रखी गईं।

पढ़ने–लिखने की प्रक्रियाओं में पुस्तकालय

पढ़ने का कोना : बच्चों के लिए पढ़ने का एक कोना होना बहुत ज़रूरी है। यह बच्चों में पढ़ने की आज़ादी और स्वामित्व की भावना पैदा करने के लिए कारगर होता है। एक पाठक बनने की प्रक्रिया में किताबों की उपलब्धता के साथ ही स्वतंत्रतापूर्वक पढ़ने का माहौल बनाना और पढ़े हुए पर संवाद के अवसर बनाना बेहद आवश्यक है।

हमारे स्कूल में प्रत्येक कक्षा में एक पढ़ने का कोना है। इसमें इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि किताबें बच्चों की पहुँच में हों। किताबें डोरी में लटकी हैं व लोहे के डिस्प्ले बॉक्स में भी हैं जिसकी जाली से किताबें झाँकती रहती हैं। पुस्तक वितरण हेतु प्रत्येक कक्षा में दो बच्चों को ज़िम्मेदारी दी गई है। उनके पास लेखा-जोखा रखने के लिए रजिस्टर भी है जिसमें बच्चों के नाम, तिथि, हस्ताक्षर आदि होते हैं। बच्चे मध्यान्तर में भी किताबें ले सकते हैं। घर ले जाना हो तो छुट्टी के पश्चात नाम दर्ज कर ले जा सकते हैं।

आप कुछ बच्चों को सहज ही धीरे व कुछ तेज़ आवाज़ में कहानी, कविता पढ़ते और चित्रों पर बतियाते देख सकते हैं। इस स्वच्छन्द वातावरण से पाठ्यपुस्तकों में रुचि रखने वाले और रुचि न रखने वाले विद्यार्थी दोनों को ही फ़ायदा पहुँचा है। उनकी पढ़ने की गति बढ़ी है व कहानी, कविता का विश्लेषण भी वे अपने ढंग व स्तरानुरूप करने लगे हैं। अभिव्यक्ति का मौक़ा देने से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। वे खुलकर अपने विचार रख पाते हैं। हमारे



विद्यालय में हिन्दी व अँग्रेज़ी दोनों भाषाओं का बाल साहित्य मौजूद है। मैंने यह भी महसूस किया कि बाल साहित्य में वे ख़ूब रुचि लेते हैं और आपस में भी ढेर सारी बातें करते हैं व मुझे भी बताना चाहते हैं। हालाँकि पुस्तकों का रखरखाव और वितरण थोड़े समय व अतिरिक्त फ़ोकस की माँग करता है, पर आख़िर हम भी तो यही चाहते हैं कि बच्चों में पढ़ने, लिखने व समझने के कौशलों का विकास हो और पुस्तकालय इसमें शानदार अनुभव के रूप में मेरे समक्ष है। मैं आज यह कह सकता हूँ कि प्रारम्भिक कक्षाओं में पुस्तकालय व बाल साहित्य का प्रयोग बच्चे के भाषाई विकास में एक स्वत: अनुभूत प्रभावी उपकरण है।

पढ़ने की घण्टी : अभी पढ़ने की घण्टी कक्षा के अन्दर स्थापित पढ़ने के कोने में ही संचालित की जाती है। इसे अब आगे पुस्तकालय में अलग से प्रतिदिन संचालित करने के बारे में सोचा जा रहा है। बच्चों के उत्साह व कार्यशालाओं से बनी समझ से पढ़ने की घण्टी के नाम से सप्ताह में एक दिन शनिवार को एक घण्टा केवल बच्चों को पढ़ने के लिए दिया जा रहा है। इस दिन बच्चे अपनी रुचि से कहानियाँ, कविताएँ आदि पढ़ते हैं, और एक दूसरे से साझा करते हैं। किन्तु ऐसा नहीं है कि अन्य दिनों में ये पढ़ना साझा करना मना है या मौक़ा नहीं दिया जाता। परन्तु शनिवार के दिन ये पढ़ना संगठित रूप में पढ़ने की घण्टी के निमित्त होता है, जिसमें निम्न गतिविधियाँ संचालित होती हैं :

- **चित्रों पर बातचीत** : पढ़ने की शुरुआत बच्चों से किताबों में छपे चित्रों पर बातचीत से की जाती है। बच्चों के साथ किताबों के चित्र लेकर उनके सामने बैठना, शुरुआत में उनसे चित्रों पर सवाल-जवाब करना, जैसे– देखो तो इसमें क्या-क्या दिख रहा है, कौन-कौन होंगे ये, ये क्या-क्या कर रहे होंगे, आदि। शुरुआत में बच्चे उन चित्रों के बारे में उसी क्रम में बताते हैं जिस तरह से वे बने हैं, जैसे– एक चिड़िया है, एक लड़का है, एक पेड़ है... आदि। किन्तु उनसे यह पूछने पर कि ये भी बताओ वो क्या-क्या कर रहे हैं? तब बच्चे उन चित्रों को विस्तार देना शुरू करते हैं। इस प्रकार चित्र पठन की प्रक्रिया से बच्चे अब ख़ूब बातचीत कर रहे हैं। किताबों से उनका एक तरह का जुड़ाव बढ़ता हुआ दिख रहा है। चित्र पठन की गतिविधि में उन बच्चों पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है जो दूसरे बच्चों से कम बात कर रहे होते हैं।

- **समूह में पढ़ना** : समूह बनाकर बच्चों को पढ़ने का टास्क दिया जाता है जिसमें वे एक दूसरे की मदद करने के साथ-साथ आपस में समझ भी रहे होते हैं और सामूहिक तौर अपना टास्क भी पूरा करते हैं।

- **व्यक्तिगत पढ़ना** : एक दूसरे को पढ़ता-लिखता देखकर बच्चे स्वयं भी पढ़ने-लिखने को प्रोत्साहित हो रहे होते हैं, इस बात का ख़्याल रखते हुए उन्हें व्यक्तिगत पठन के मौक़े दिए जाते हैं।

- **चित्र बनाना** : जैसा कि बच्चों को चित्र बनाना बहुत पसन्द होता है तो उनकी इस रुचि को ध्यान में रखते हुए उन्हें अपने

पढ़े-लिखे पर चित्र बनाने को प्रेरित किया जाता है, जिसमें वे अपनी किताब की समझ को विविध चित्र-कहानी या कविता के रूप में पेश करते हैं।

- **कहानी-कविता लिखना** : बच्चे किताब से पढ़ी विषयवस्तु, जैसे– कहानी या कविता को अपनी समझ से लिखते हैं।

पढ़े-लिखे हुए को साझा करना : बच्चों के द्वारा पढ़ी गई कहानी व कविता या अन्य प्रकार की बातों को साझा करने के लिए प्रार्थना सभा का उपयोग किया जाता है। बच्चे अपनी पढ़ी गई बातों को प्रार्थना सभा में सभी के सामने रखते हैं। इसका असर ये देखने को मिला कि जो बच्चे पहले से उस कहानी को पढ़ या सुना चुके हैं वो बीच-बीच में बोलकर प्रस्तुत करने वाले साथी की मदद करते हैं। कभी-कभी यह भी देखने को मिला कि बच्चे ये भी कह देते हैं कि सर, इसने ग़लत बोला, यानी उसमें कुछ मिसिंग था। इस प्रकार बच्चे एक दूसरे से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं। बच्चों को एक दूसरे से अपने लिए ली गई पुस्तक के चित्रों के बारे में एक दूसरे को बताने को भी कहा जाता है।

घर के लिए पुस्तकें : इसके अलावा छुट्टी के समय बच्चे किताबों को पढ़ने के लिए घर ले जाते हैं। जिसे चाहिए वो किताबों को अपने नाम पर रजिस्टर में दर्ज करवा लेता है, और दो या तीन दिन बाद उसे पढ़कर वापस कर देता है। इस पूरे लेनदेन के काम को बच्चे ही संचालित कर रहे हैं।

बच्चों के द्वारा नियमित उपयोग किए जाने के लिए पुस्तकालय हमेशा ही खुला रहता है, और इसका संचालन बच्चे ख़ुद ही करते हैं। इस प्रकार, जिस किसी बच्चे को किताब की ज़रूरत होती है वो किसी भी समय पुस्तकालय संचालित करने वाली टीम के पास जाकर किताबों को अलमारी या डोरी में टँगी किताबों में से निकाल कर ले जाता है। ऐसा कभी भी किया जा सकता है। बच्चे अब किताबों को ख़ुद ही निकालते और रखते हैं। इस सम्पूर्ण कार्य में सभी शिक्षक साथी सहयोग करते हैं।

बच्चों के साथ किताबों पर बातचीत के कुछ अनुभव

1. **आरुषि, कक्षा 2** : आरुषि ने 'अप्पू और माना' की दोस्ती से सम्बन्धित कहानी पढ़ी और बताया कि उसे अप्पू हाथी और माना (लड़के) की दोस्ती अच्छी लगी। आरुषि ने कहा कि उसे जानवर बहुत पसन्द हैं व वह उनको प्यार करती है।
2. **कशिश, कक्षा 5** : कशिश ने 'मनमौजी कौआ' कहानी पढ़ी। इस कहानी के सम्बन्ध में उसने बताया कि एक मनमौजी कौआ होता है जो एक दिन राजा के सिंहासन पर जाकर बैठ जाता है। तब राजा उसे सज़ा के तौर पर दलदल में काँटों में फेंक देता है एवं और भी सज़ाएँ देता है पर कौआ हमेशा मुस्कुराता रहता है। कशिश को यह पसन्द आया कि कौआ डरा नहीं और उसने हर मुसीबत को हँसते-हँसते झेला और अन्त में मुक्त हुआ।
3. **नेहा, कक्षा 4** : नेहा ने 'छोटा-सा मोटा-सा लोटा' पढ़ी। उसे लोटे पर कविता पसन्द आई।
4. **स्वर्णिका, कक्षा 5** : स्वर्णिका इसी वर्ष लॉकडाउन में अँग्रेज़ी माध्यम के एक स्कूल से हमारे विद्यालय आई है। स्वर्णिका ने कई कहानियाँ पढ़ीं। उसमें से एक थी- 'My life — The tale of a butterfly'. उसने तितली के अण्डे देने से लेकर लार्वा, पंख निकलने व उड़ने तक का जीवनचक्र ख़ूब मज़े से सुनाया। उसने 'valveti' का अर्थ भी पूछा, जो मैंने बताया– वेलवेट जैसा मुलायम।
5. **अंशुमन, कक्षा 3 : अंशुमन ने 'एक आँख वाली चिड़िया'** कहानी पढ़ी। इस कहानी में अंशुमन ने बताया कि एक आँख वाली चिड़िया जाल में फँस जाती है। वह मदद के लिए पुकारती है पर कोई जानवर उसकी मदद नहीं करता। सब पास से गुज़र जाते हैं। ऐसे में पशु पालक (ग्वाले) उसकी मदद करते हैं। अंशुमन ने कहा कि हमें ज़रूरतमन्दों की मदद करनी चाहिए।

6. **ख़ुशी, कक्षा 4 :** ख़ुशी ने 'बर्फ़ीली बूँद' कहानी पढ़ी, जिसमें उसने बताया कि राजा की बेगम को चींटी काट लेती है। तब एक मंत्री जो मेहनती है, वह मामले की तह तक जाकर पता करता है कि वह चींटी कौन है। यहाँ अंशुमन को गहराई से हल निकालना पसन्द आया।

बच्चों पर प्रभाव

बच्चों तक किताबों की पहुँच बनाने व परिचित कराने का कार्य करते हुए मुझे उनमें कुछ बदलाव दिखे जो इस प्रकार हैं :

- **पढ़ने-लिखने की आदत का विकास :** किताबों तक पहुँच होने के कारण प्रत्येक बच्चा किताबें ले जाने लगा, इससे उनकी कविता, कहानियों की किताबों को पढ़ने की रुचि बढ़ने लगी। बच्चे कहानी के पात्रों पर चर्चा करते हैं, जैसे– कौन-सा पात्र बेहतर था और क्यों, कौन-सा ख़राब और क्यों, कहानी का दूसरा शीर्षक, अगर आप उस पात्र की जगह होते तो क्या करते, आदि। बच्चे काफ़ी देर तक कहानी पर चर्चा करना चाहते हैं। इस प्रक्रिया में वे बच्चे भी शामिल होते हैं जो कक्षा में कम बोलना पसन्द करते हैं। इस प्रकार आत्मविश्वास बढ़ाने में भी पुस्तकालय मददगार साबित हुआ और बच्चों में पढ़ने-लिखने की आदत विकसित हो पा रही है।
- **ज़िम्मेदारी निभाने की भावना विकसित हुईः** कुछ बच्चों को पुस्तकें बाँटने, लिखने और सँभालने की ज़िम्मेदारी मिलने से उनमें स्वानुशासन की भावना आई। अब वे किताबों का रखरखाव करना अपनी ज़िम्मेदारी समझते हैं।
- **शब्द भण्डार में वृद्धि :** उनके शब्द भण्डार में बढ़ोत्तरी हो रही है। वे नए शब्दों का अर्थ जानने के लिए अपने साथियों के अलावा शिक्षकों से पूछते हुए अर्थ ग्रहण करते हैं।
- **किताबों के प्रति स्वामित्व** : पुस्तकों को सँभालने का भाव आया है और अब वे पुस्तकों को सम्मान देने लगे हैं। पुस्तकों का फटना या ग़ायब होना लगभग बन्द हो गया है।
- **अभिभावकों से मदद :** घर ले जाने की स्वतंत्रता मिलने से उन्होंने माता-पिता के साथ पुस्तकों पर बातचीत की है व अपने मन की जिज्ञासाओं को शान्त किया है। माता-पिता को पालक-शिक्षक मीटिंग में बताया गया था कि बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अलावा इन किताबों को अवश्य पढ़ने दें।
- **एक दूसरे से साझा करने की संस्कृति का विकास :** कहानी पर चर्चा करने से कहानी और अच्छे-से याद हो पाई। साथ ही अन्य साथियों से भूल सुधार के अवसर मिले हैं क्योंकि एक ही कहानी 4-5 छात्रों ने पढ़ी होती है। बच्चों की एक दूसरे को कहानी सुनाने की आदत बन पा रही है।
- **ख़ुद की कहानी-कविता :** कक्षा शिक्षण पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित नहीं रह गया है, अब शिक्षण में अन्य किताबों का इस्तेमाल भी हो पा रहा है। ये बाल साहित्य बच्चों को पूरी दुनिया की सैर कराता है। यह उनमें स्वतंत्र चिन्तन, पढ़ने का आनन्द व स्वयं पढ़कर ज्ञान-निर्माण करने हेतु प्रेरित करता है। बच्चों ने ख़ुद के अनुभवों को कहानी-कविता के रूप में भी बुना है।
- **भय-मुक्त शिक्षा :** शिक्षा का अधिकार अधिनियम के क्लॉज़ 'लर्निंग विदाउट फियर' को बल प्रदान करता है।
- **देखे व सुने को लिखना** : बच्चे अपनी कॉपी में भी किसी देखी हुई घटना को अपने शब्दों में लिखने लगे हैं। शैक्षिक भ्रमण, गाँव की शादी, छुट्टियों में यात्रा का विवरण, आदि वे लिख लेते हैं।
- **व्याकरण की समझ :** संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण वाले शब्दों

को छाँटना या उनका वर्गीकरण करना जानने लगे हैं।

- **अन्य विषयों से जुड़ाव बढ़ता दिख रहा है :** हिन्दी भाषा में समझ बढ़ने से अन्य विषयों से भी जुड़ाव बढ़ा है, जैसे– 'लुकिंग अराउंड' में सामान्य ज्ञान, विज्ञान और देश-विदेश की जानकारी, आदि को समझने लगे हैं। विदेशों की भी कई कहानियाँ पुस्तकालय में मौजूद हैं, इनमें भी बच्चे रुचि लेने लगे हैं। *गणित के खेल, चकमक, आओ गणित को रोचक बनाएँ,* आदि पुस्तकों से गणित विषय में रुचि बढ़ी है।

बच्चों के पढ़े हुए पर बातचीत करने, सवाल के माध्यम से चर्चा को आगे बढ़ाने और पढ़े हुए के बारे में उनकी प्रतिक्रिया का स्वागत करने से बच्चे एक बार फिर उस पाठ सामग्री पर लौटकर चिन्तन करते हैं, उसकी बारीक़ परतों पर विचार करते हैं या सवालों के माध्यम से गहराई में जाकर सोचते हैं। इससे पढ़ने की गम्भीरता बनती है और पढ़े हुए पर व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्ति कर पाने का कौशल विकसित होता है। इस तरह, शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों को पाने के प्रयास में पुस्तकालय एक बड़े संसाधन के रूप में हमारे पास मौजूद है।

सम्पूर्णानन्द जुयाल राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय, ल्वाली, विकासखण्ड पौड़ी, पट्टी गगवाड़स्यूं, ज़िला पौड़ी गढ़वाल में शिक्षक हैं। कोविड काल में उन्होंने पूरे साल घुमन्तु समुदाय के बच्चों के बीच पढ़ना-लिखना सिखाने का कार्य किया। नवोदय विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए बच्चों की तैयारी में सहयोग करते हैं। उनकी पढ़ने, संगीत, लेखन और समाजसेवा में विशेष रुचि है।
सम्पर्क : snjuyal123@gmail.com